6

''आने वाली अच्छी बातों की प्रतिबिम्ब''

(9:1-10:1)

इब्रानियों की पुस्तक को सरसरी तौर पर पढ़ने से भी पता चल जाता है कि यह पुरानी वाचा अर्थात मूसा की व्यवस्था और यीशु मसीह की नई वाचा के बीच सम्बन्ध की बात है। यह पुस्तक हमें उस सम्बन्ध पर कई तथ्य बताती है। (1) नई वाचा पुरानी से उत्तम है, जिसका अर्थ यह है कि पुरानी वाचा नई से कमतर है। (2) पुरानी वाचा को हटा दिया गया है यानी नई वाचा प्रभावी रहती है और हम इसके अधीन रहते हैं। (3) पुरानी वाचा से हम सबक सीख सकते हैं। उदाहरण के लिए इस्राएलियों का प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश न कर पाना उनकी तरह परमेश्वर की आज्ञा न तोड़ने की मसीही लोगों को चेतावनी है।

इस पाठ में हम दोनों वाचाओं के सम्बन्ध की एक और सच्चाई पर ज़ोर देना चाहते हैं कि *पुरानी वाचा नई वाचा का प्रतिबिम्ब है*। इस विचार को सबसे बेहतर व्यक्त करने वाली एक आयत इब्रानियों 10:1 है: ''क्योंकि व्यवस्था, जिसमें आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है,[1] पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं।''[2] हम इस विचार पर ध्यान देना चाहते हैं कि व्यवस्था ''आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है'' और फिर इब्रानियों 9 से विशेष तौर पर ध्यान दें कि व्यवस्था किस प्रकार से मसीह के नियम के आगे प्रतिबिम्ब थी।

''प्रतिबिम्ब'' होने का क्या अर्थ है?

परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक के ''प्रतिबिम्ब'' की बात करने का क्या अर्थ था? उसके कहने का अर्थ था कि पुरानी वाचा कई तरह से नई वाचा का प्रतिबिम्ब अर्थात प्रतिबिम्ब या प्रतिरूप का काम करती है। मान लीजिए कि आप किसी ऊंची दीवार के साथ-साथ चलते हैं और आपको दूसरी ओर से कदमों की आहट सुनाई देती है। जब तक आप यह नहीं देख पाते कि वह कौन है, आपको मालूम नहीं पड़ता कि वह व्यक्ति कैसा दिखाई देता है। दीवार के सिरे तक पहुंचते हुए कल्पना करें कि आपको उस व्यक्ति के सिर की परछाई की एक झलक मिलती है। उसे देखने से बहुत पहले आप उसकी परछाईं से ही उसके बारे में कुछ जान सकते हैं। इसी प्रकार से अधिक विस्तार से तो नहीं, परन्तु व्यापक रूपरेखा में व्यवस्था ने कुछ बातों में नई वाचा का परिदृश्य दे दिया।

अधिक स्पष्ट कहें तो नई वाचा के प्रतिबिम्ब या ''परछाईं'' के रूप में व्यवस्था तीन विचारों का सुझाव देती है:

(1) नये नियम की *प्राथमिकता*। मसीह ने आकर अपनी कलीसिया बनाने के समय पुराने

नियम की नकल नहीं की; तम्बू उस कलीसिया की नकल था, जिसे मसीह ने बनाया। इसलिए कलीसिया तम्बू के बनाए जाने से बहुत पहले परमेश्वर के मन में थी।

(2) नये नियम की *श्रेष्ठता*। बिना किसी संदेह के जिसकी परछाई होती है, उसका महत्व परछाईं से अधिक होता है।

(3) दो वाचाओं की *समरूपता*। प्रतिबिम्ब उस तत्व से मिलता नहीं होता, जिसका प्रतिबिम्ब होता है, परन्तु दोनों में कुछ समानताएं होती हैं। इसी प्रकार से पुराना नियम नये नियम के जैसा नहीं है पर अलग-अलग तरह से केवल इसके समरूप है। (''आने वाली अच्छी बातों का प्रतिबिम्ब'' चार्ट देखें।)

व्यवस्था किस प्रकार से एक प्रतिबिम्ब थी?

आइए देखते हैं कि व्यवस्था ''आने वाली अच्छी बातों का प्रतिबिम्ब'' कैसे थी।

आने वाली अच्छी बातों का प्रतिबिम्ब	
प्रतिबिम्ब	**असली स्वरूप**
हौदी। पवित्र स्थान के बाहर एक हौदी थी, जहां पवित्र स्थान में प्रवेश करने के बाद याजक स्नान करते थे।	**बपतिस्मा।** कलीसिया अर्थात हमारे ''पवित्र स्थान'' में प्रवेश करने के लिए पानी में बपतिस्मा लेकर लोगों को अपने पाप धुलवाना आवश्यक है।
होमबलि की वेदी। पवित्र स्थान के बाहर एक वेदी थी, जहां पशुओं का बलिदान किया जाता था।	**अपना बलिदान।** मसीही लोगों को पशुओं के नहीं बल्कि अपने बलिदान देने आवश्यक हैं (रोमियों 12:1, 2)।
याजक। व्यवस्था के अधीन लोगों का एक विशेष समूह ही याजक होने के योग्य होता था।	**मसीही।** हर मसीही याजक है (1 पतरस 2:5, 9)।
पवित्र स्थान। तम्बू के भीतर एक पवित्र स्थान था, जिसमें केवल याजक लोग ही जा सकते थे।	**कलीसिया।** कलीसिया मसीह का खरीदा हुआ ''पवित्र स्थान'' है जिसमें ''याजक'' (मसीही लोग) आराधना और सेवा करते हैं।
दीवट। पवित्र स्थान में एक दीवट था, जो इसके भीतर प्रकाश करता था।	**परमेश्वर का वचन।** बाइबल अर्थात परमेश्वर का वचन कलीसिया को प्रकाश और दिशा देता है।
भेंट की रोटियां। पवित्र स्थान में ''भेंट की रोटियों की मेज़'' थी।	**प्रभु भोज।** कलीसिया में हम ''प्रभु की मेज में भागी होते हैं'' (1 कुरिन्थियों 10:21)।
धूपदानी। पवित्र स्थान में एक धूपदानी या धूप की वेदी थी, जहां से धुआं परम पवित्र स्थान में जाता था।	**प्रार्थना।** प्रार्थना को धूप से मिलाया गया है (प्रकाशितवाक्य 5:8) क्योंकि यह परमेश्वर की उपस्थिति में ही जाती है।
पर्दा। पवित्र स्थान और परम पवित्र स्थान या पवित्रों के पवित्र के बीच में एक पर्दा था।	**शरीर।** (देखें इब्रानियों 10:19, 20.)। कलीसिया के लोगों को स्वर्ग से अलग करने वाला ''पर्दा'' उनका शरीर है।

परम पवित्र स्थान। परम पवित्र स्थान तम्बू के भीतरी भाग को कहा जाता था; यह वही स्थान था, जहां परमेश्वर अपने लोगों से भेंट करता था; केवल महायाजक ही यहां प्रवेश कर सकता था।	**स्वर्ग।** मसीह ने स्वर्ग में प्रवेश करके हमारे लिए अपने पीछे आना सम्भव बना दिया है। वहां हम परमेश्वर की उपस्थिति में रहेंगे।
महायाजक। पुरानी वाचा में एक महायाजक होता था, जो वर्ष में एक बार परम पवित्र स्थान में जाता था।	**मसीह।** मसीह हमारा महायाजक है, और वह व्यवस्था के अधीन सेवा करने वालों से बेहतर महायाजक है। वह सदा के लिए एक ही बार अपना अपना लहू लेकर स्वर्ग में गया।
पशुओं का लहू। व्यवस्था के अधीन पापों के लिए एकमात्र बलिदान पशुओं का लहू होता था।	**मसीह का लहू।** मसीह क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा सदा के लिए पापों को दूर कर देता है।

इब्रानियों 9:1-14 में हमें पता चलता है कि पुरानी वाचा का बलिदान का प्रबन्ध ''आने वाली अच्छी बातों का प्रतिबिम्ब'' अर्थात यीशु मसीह के बलिदान की परछाईं थी।

अगली चर्चा के लिए मंच तैयार करते हुए 9:1-5 की बातों ने मूल पाठकों को मन्दिर के भौतिक प्रबन्धों का स्मरण करा दिया। उन प्रबन्धों में (1) पवित्र स्थान; (2) दीवट, मेज़ और पवित्र रोटी सहित पवित्र स्थान की चीज़ें; (3) परम पवित्र स्थान और (4) धूप की वेदी[3] और वाचा के संदूक (इसमें रखी वस्तुओं सहित) सहित, जिस पर करुबों के साथ अनुग्रह का सिंहासन था, परम पवित्र स्थान की चीज़ें थीं।

9:5 के अनुसार इन चीज़ों के महत्व पर और काफ़ी कुछ कहा जा सकता है। परन्तु इस पाठ में हमारा सबसे अधिक ध्यान उस बात पर है जिसे पवित्र शास्त्र बताता है कि पुरानी वाचा नई वाचा की परछाईं कैसे थी। कुछ तुलनाओं के लिए जो की जा सकती हैं, अगले पृष्ठ पर छोटा सा चार्ट देखें।

इब्रानियों 9 अध्याय तम्बू की चीज़ों के महत्व को विस्तार से नहीं बताता। इन चीज़ों का उल्लेख करने के बाद 9:6-10 में केन्द्र बिन्दु प्रतिबिम्ब अर्थात व्यवस्था के अधीन किए जाने वाले बलिदानों की ओर हो जाता है।

बलिदानों के सिस्टम में क्या होता था?

व्यवस्था के प्रभावी रहने तक याजक लगातार पवित्र स्थान में जाते थे (9:6)। हम यहां अपने आपको यह याद दिलाने के लिए रुक सकते हैं कि इस युग में मसीही लोग परमेश्वर को बलिदान भेंट करने वाले याजक हैं और उन सब की यह जिम्मेदारी है। आयत 8 और 9क से पता चलता है कि इस स्थिति के रहने तक, ''पवित्र स्थान का मार्ग प्रगट नहीं हुआ [था]'' व्यवस्था के अधीन स्वर्ग का रास्ता खुला नहीं था। केवल महायाजक ही परम पवित्र स्थान में जाता था, और वहां वह पापों के लिए बलिदान भेंट करने के लिए पशुओं का लहू लेकर साल में केवल एक बार जाता था (9:7)।

इन बलिदानों के साथ क्या दिक्कत थी? आयतों 9ख और 10 में लेखक ने दिखाया कि ये बलिदान अधूरे थे यानी वे पापों को दूर नहीं कर सकते थे (''जिनसे आराधना करने वालों के विवके सिद्ध नहीं हो सकते थे'')।

9:11–14 में हमारा ध्यान प्रतिबिम्ब से असली स्वरूप अर्थात असली स्वरूप यानी बलिदानों के लेवीय प्रबन्ध के पूरा होने की ओर दिया जाता था।[4]

अब क्या होता है?

अब जबकि व्यवस्था बीत चुकी है तो हम उन महत्वपूर्ण परिवर्तनों को देखते हैं कि हम लोगों को परमेश्वर की आराधना कैसे करनी चाहिए। (1) मूसा की व्यवस्था में, एक महायाजक होता था जबकि आज मसीह हमारा महायाजक है (9:11)। (2) व्यवस्था में एक तम्बू होता था जबकि एक ''और सिद्ध तम्बू'' है (9:11)। (3) मूसा के युग में एक पवित्र स्थान होता था (9:12 ''पवित्र स्थान'' वास्तव में परम पवित्र स्थान को कहा गया है)। यीशु परम पवित्र स्थान में गया यानी वह स्वयं स्वर्ग में गया। (4) व्यवस्था के अधीन पापों के लिए बलिदान चढ़ाए जाते थे; परन्तु नई वाचा का बलिदान मसीह का लहू है (9:12)। (5) पूर्व युग में, बलिदान बार-बार चढ़ाए जाते थे जबकि इस युग में मसीह ने सदा के लिए ''एक ही बार'' केवल एक बलिदान चढ़ा दिया है (9:12)।

परिणाम क्या हैं? मसीह के बलिदान के कारण अनन्त छुटकारा पक्का हो गया (9:12)। पुरानी वाचा कुछ बातों को पूरा करती है (औपचारिक रूप में शुद्धि; 9:13), परन्तु नई वाचा सब कुछ पूरा करती है (वास्तविक शुद्धि; 9:14)। मसीह के सिद्ध बलिदान का एक और परिणाम यह होना चाहिए कि हम ''जीवित परमेश्वर की सेवा करें'' (9:14)।

वाचा की स्वीकृति

एक और ढंग की पुरानी वाचा नई वाचा का प्रतिबिम्ब इब्रानियों 9:15–21 में मिलता है। इन आयतों में हमें पता चलता है कि पुरानी वाचा की स्वीकृति नई वाचा की स्वीकृति का प्रतिबिम्ब है।

मसीह का लहू वह पूरा करने के लिए कार्यकारी है जो पशुओं का लहू पूरा नहीं कर पाया; यह शरीर को नहीं बल्कि विवेक को शुद्ध कर सकता है। यह और किस प्रकार से प्रभावी है? 9:15 के अनुसार यह लोगों को पहली वाचा के अपराधों से छुटकारा दिलाकर और यीशु मसीह को एक नई वाचा का मध्यस्थ बनाता है।

यीशु की मृत्यु नई वाचा के उसके मध्यस्थ होने से क्या सम्बन्ध है? यह उस वाचा को वैसे ही सम्भव बनाता है जैसे वसीयत लिखने वाले की मृत्यु उसकी वसीयत को प्रभावी बनाती है (9:16, 17)।[5]

पुराने नियम की घटनाएं बात को समझाने के लिए दोहराई जाती हैं। पहली वाचा लहू के साथ स्वीकार की गई थी (9:18–21)। निर्गमन में लिखे के अनुसार, लोगों ने परमेश्वर के साथ एक वाचा बांधी थी (निर्गमन 19)। फिर परमेश्वर ने उन्हें आज्ञाएं दीं (निर्गमन 20–23)। व्यवस्था लोगों को पढ़कर सुनाई गई और वे फिर इसे मानने को सहमत हो गए। फिर इस बात के चिह्न के रूप में कि वाचा को स्वीकार कर लिया गया है, लोगों के ऊपर लहू छिड़का गया (निर्गमन 24:8)। उस कार्य के साथ वाचा को अन्तिम स्पर्श मिल गया। परमेश्वर और मनुष्य उस दिन से लेकर वाचा के द्वारा बन्द गए। लगभग उसी तरह से आज हम लहू के साथ बांधी

गई वाचा के अधीन रहते हैं (देखें मत्ती 26:28)। हमारे साथ मसीह की वाचा क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा लहू के साथ पक्की हुई है।

अगले पाठ इब्रानियों 9:21-28 में हम सीखेंगे कि पुरानी वाचा के द्वारा दिया गया शुद्ध किया जाना नई वाचा में शुद्ध किए जाने का प्रतिबिम्ब या परछाईं था।

पहले, आयतें 21 और 22 इस तथ्य की बात करती हैं कि पुरानी वाचा के अधीन तम्बू की चीज़ों की शुद्धता में लहू शामिल था। बिना लहू के शुद्धि होती ही नहीं।

दूसरा, तम्बू की चीज़ों को स्वर्गीय चीज़ों की नकल ही बताया गया है (9:23)। असली स्वरूप क्या हैं? नये नियम की चीज़ें उदाहरण के लिए कलीसिया और इसकी आराधना।

तीसरा, हमें बेहतर बलिदानों के बारे में बताया गया है जो वास्तव में शुद्ध करते हैं। इस पृष्ठ वाले चार्ट में देखें कि पुरानी वाचा के बलिदानों की तुलना और अन्तर नई वाचा के हमारे सिद्ध बलिदान से किस प्रकार किया गया है।

हमारे वचन पाठ का मुख्य सबक क्या है? हमारे पास एक बेहतर यानी उत्तम वाचा है जिसमें उत्तम बलिदानों के साथ हमें पवित्र किया जाता है। इसलिए हमें इसे छोड़ना नहीं चाहिए (विशेषकर, आरिम्भक पाठकों के मामले में, यहूदी धर्म में वापस न जाएं)। इसके अलावा हमें आभारी होना चाहिए। यह जानते हुए कि हम क्या जानते हैं, हमें आनन्द करना चाहिए कि हम मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं रह रहे। हमें परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि हमारा एक बड़ा महायाजक है, जो दूर खड़ा नहीं रहता। बल्कि हमारे लिए मर गया और अपना स्वयं का बलिदान देकर स्वर्ग ही में गया। हम आनन्द कर सकते हैं कि उद्धार अब हमारा है!

सारांश

अध्याय 9 का समापन आयतों 27 और 28 में होना बिल्कुल उपयुक्त है। यीशु के अनुभव को दिखाने के लिए मनुष्य के अनुभव का इस्तेमाल किया गया है। मनुष्य का मरना आवश्यक है, और फिर उसके बाद न्याय होता है। इसी प्रकार से यीशु मरा और फिर उसके बाद न्याय होगा (उसके द्वितीय आगमन पर)। यह जानते हुए कि वह दोबारा आ रहा है, उसके वफ़ादार ''उससे मिलने को उत्सुक'' हैं। क्या आप उसकी वापसी की राह उत्सुकता से देख रहे हैं?

टिप्पणियां

[1]''आने वाली अच्छी बातें'' वाक्यांश का इस्तेमाल नई वाचा के लिए हुआ है। पुराने नियम के दृष्टिकोण से देखने पर वे ''अच्छी बातें'' अभी आने वाली हैं; हमारे दृष्टिकोण से देखने पर, वे पहले ही आ चुकी हैं। इसका अर्थ यह है कि हमारे लिए वे ''आ चुकी अच्छी बातें'' हैं। [2]अन्य आयतें भी जो यह संकेत देती हैं कि व्यवस्था एक प्रतिबिम्ब था, उनमें 9:9, 11, 23, 24 शामिल हैं। [3]धूपदानी वास्तव में पवित्र स्थान में थी; यहां इसे परम पवित्र स्थान की चीज़ के रूप में बताया गया है, क्योंकि वेदी से धूप का धुआं परम पवित्र स्थान में ही जाता था। [4]दोनों वाचाओं में बलिदानों के भेंट किए जाने का स्थान (आयत 11), भेंट करने वाले (आयत 11), बलिदान भेंट किए जाने के तरीके (आयत 12) और बलिदानों के प्रभावों में (आयतें 9ख, 13-15) अन्तरों पर ध्यान दें। [5]9:16, 17 में अनुवादित शब्द ''वाचा'' का अर्थ वाचा या समझौता हो सकता है, जैसे इस्राएल के साथ बांधी गई परमेश्वर की वाचा के समय। परन्तु इसी शब्द को ''अन्तिम वसीयत और नियम'' की अभिव्यक्ति की तरह ''वसीयत'' या ''नियम'' कहा जा सकता है। इब्रानी भाषा में आमतौर पर शब्द का अर्थ ''वाचा'' है। परन्तु यहां इसका अर्थ ''वसीयत'' या ''नियम'' है।

नया (असली स्वरूप)	पुराना (प्रतिबिम्ब)
मसीह पर केन्द्रित (9:24)।	महायाजक प्रवेश करता था (9:25)।
असली तम्बू (9:24)।	हाथों से बनाया हुआ तम्बू, असल की नकल (9:24)।
सदा के लिए एक बार (9:12, 28)।	बार-बार (9:25; 10:1)।
मसीह के अपने लहू के साथ (9:26)।	अपने लहू के साथ नहीं (9:25)।

पुरानी वाचा के बलिदानों में नई वाचा के बलिदान की परछाईं।